Mohit

Serial No.

Page :

Date :

EPC-3

READING AND REFLECTION ON TEXTS

CODE- E 702

SECRET NO. 2114015

UNITED SECULAR SOCIETY

Signature of the checker

INDEX (10)

S. No	Title
1.	फाइल के उद्देश्य
2.	समीक्षा का अर्थ
3.	Text Book - 1 "समकालीन भारत और शिक्षा"
a.	पाठ्य - वस्तु
b.	विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण
4.	Text Book - 2 "शिक्षा के दार्शनिक और समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य"
a.	पाठ्य - वस्तु
b.	विषय - वस्तु का प्रस्तुतीकरण
5.	Text Book - 3 "अधिगमकर्ता का विकास"
a.	पाठ्य - वस्तु
b.	विषय - वस्तु का प्रस्तुतीकरण
6.	Text Book - 4 "शिक्षक, शिक्षण एवं तकनीकी"
a.	पाठ्य - वस्तु
b.	विषय - वस्तु का प्रस्तुतीकरण
PC-3	READING & REFLECTING ON TEXT PRACTICAL FILE

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic   Date / /20

फाइल के उद्देश्य

1) स्वाध्याय की प्रवृत्ति को विकसित करना।

2) पढ़ने व लिखने सम्बन्धी कौशल का विकास।

3) संक्षीप्तिकरण कौशल का विकास।

4) नोट्स ग्रहण करने की क्षमता का विकास।

5) विश्लेषण एवं संश्लेषण कौशलो का विकास।

6) संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास।

7) अभिव्यक्ति की क्षमताओं का विकास।

8) सृजनात्मकता का विकास।

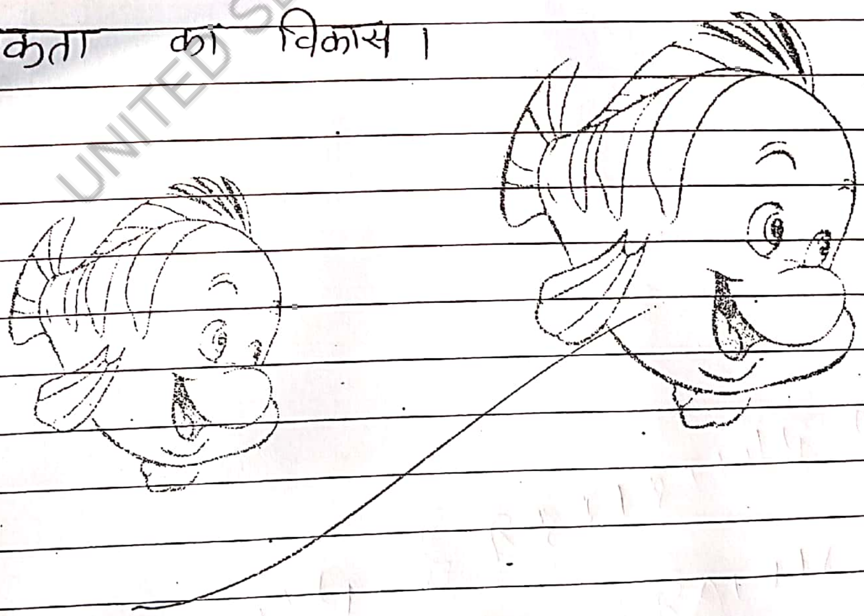

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

2

Topic Date / /20

समीक्षा का अर्थ

समीक्षा किसी पुस्तक का पुनः निरिक्षण होता है। जिसके अन्तर्गत हमें अपने सृजनात्मक बुद्धि का प्रयोग करते हुए तर्क और विश्लेषण के द्वारा कि गयी सहायता से विचारो को प्रकट करते है। यदि समीक्षा के समान शब्दो को देखा जाये तो सार, सर्वेक्षण, पुनरावलोकन समालोचना, परखना, समसामयिकी प्रदर्शन और निरीक्षण करना है।

समीक्षा के अन्दर हम साहित्य का पुनर्मूल्यांकन करते है। अर्थात, सम्बन्धित साहित्य को तर्क की कसौटी पर परखकर उसके गुण व दोषो का अध्ययन करते है। पुस्तक के किस भाषा शैली का प्रयोग हुआ है। उसमे रचित वाक्य रचना किस तरह की है। सम्बन्धित विषय का किस प्रकार विश्लेषण किया गया है। साहित्य रचना करते समय उसकी उपयोगिता को ध्यान मे रखा गया है अथवा नहीं। इन सभी बातो का ध्यान रखते हुए पुस्तक की समीक्षा प्रस्तुत की जाती है।

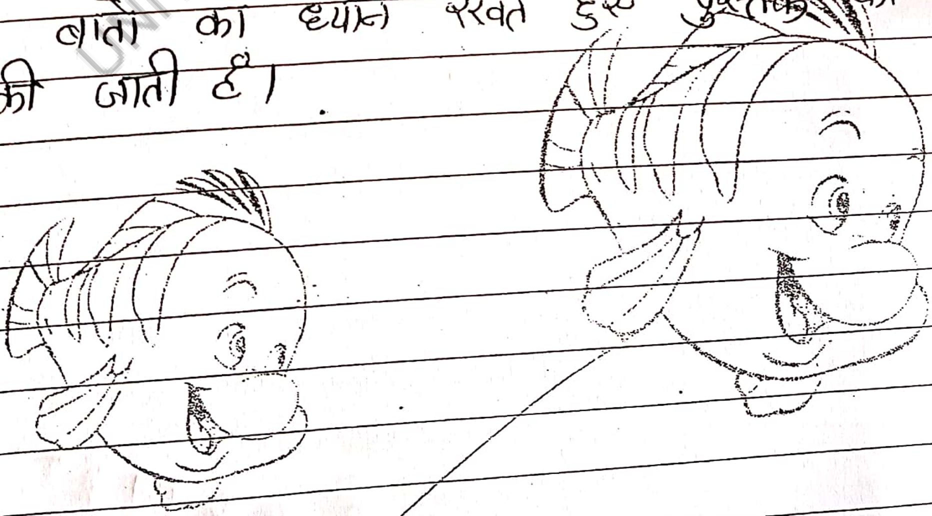

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :

Date :

Serial No.

UNITED SECULAR SOCIETY

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :

Date :

(4)

Serial No. 1

समीक्षा कैसे लिखे

किताबो चलचित्र से लेकर मिस्त्री तथा होटल तक के बारे में जानकरी प्राप्त करने का सबसे उपयुक्त साधन उसकी समीक्षा पढ़ना है।

(1) उत्पाद या सेवाओ का संक्षिप्त विवरण –

शुरुआत की कुछ पंक्तियों में पुस्तक उत्पाद या सेवाओ के बारे में संक्षिप्त जानकारी दे। पुस्तक की बारे में विस्तार से समीक्षा आगे के प्रष्ठ में दे।

(2) विस्तृत जानकरी –

पुस्तक या उत्पाद की समीक्षा के दौरान विस्तृत जानकरी तर्कों के द्वारा तथा सादृ्य प्रस्तुत करके सटीक उदाहरण प्रस्तुत करे।

(3) पूर्ण वाक्य लिखे –

अपूर्ण वाक्य तथा अधूरे शब्दो के प्रयोग से बचे क्योकि ये पाठको को भ्रमित करता है। इसके पाठक निश्चित जानकारी प्राप्त नही कर पाते है।

(4) सटीक तथा उपयुक्त वाक्यो तथा शब्दो का उपयोग –

सटीक तथा उपयुक्त शब्दो को प्रयोग समीक्षा को विश्वसनीय बनाता है या प्रमनित करता है।

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

(5)

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 2

⑤ व्यक्तिगत दृष्टिकोण –

समीक्षा को स्वयं के अनुभवो के आधार पर व्यक्तिगत दृष्टिकोण दे। समीक्षा में पाठक अपने व्यक्तिगत अनुभव जानने को उत्सुक होगे।

⑥ सत्यता बनाये रखे –

समीक्षा लिखने के दौरान सत्यता पर विशेष ध्यान दे। विषयवस्तु में अनावश्यक जानकारि तथा अत्याधिक विस्तार से बचे। किसी बिंदु पर जानकारी का आभाव होने पर उसकी समीक्षा से बचो।

⑦ निष्पक्ष समीक्षा –

समीक्षा के दौरान सत्यता पर विशेष ध्यान दे। नकारात्मक तथ्यों को नपे तुले शब्दो में बताये। पाठक सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनो ही पक्ष जानना चाहेगे।

⑧ सृजनात्मक तथा रोचक –

उत्तम समीक्षा पाठको की रुचि बनाये रखती है तथा उन्हे आगे पढ़ने को प्रेरित करती है। समीक्षा कल्पनात्मक तथा उपयुक्त जानकारी देने वाली होनी चाहिये।

⑨ पारदर्शिता –

समीक्षा में अंत तक पारदर्शिता होनी चाहिये।

Signature of the checker

UNITED SEVA SOCIETY

Scanned with CamScanner

(10) प्रूफ रीडिंग –
परीक्षा में शब्दो तथा व्याकरण की त्रुटियो से बचने के लिये एक से अधिक बार प्रूफ रीडिंग करनी चाहिये।

(11) विशेषज्ञ की सलाह –
किसी अन्य विषय के जानकर से भी समीक्षा के बारे में राय ले।

(12) सावधानी –
समीक्षा के दौरान अत्यधिक नकारात्मक विचारो से बचे। समीक्षा के दौरान सत्य तथा सटीक जानकारी दे। अगर आपके द्वारा दी गयी जानकारी सत्य है तो आपको पाठको द्वारा अधिक सराहना मिलेगी।

गुड्वार एण्ड स्केट्स के अनुसार "एक कुशल चिकित्सक के लिये यह अनिवार्य है कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बन्धी आधुनिकतम खोजो से परिचित होता रहे उसी प्रकार जिज्ञासु छात्र अनुसंधान के क्षेत्र में कार्य करने वाले तथा अनुसंधानकर्ता के लिये उस क्षेत्र से सम्बन्धित सूचनाओ एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक है।

चार्टर बी॰ गुड के अनुसार "मुद्रित साहित्य के अनुसार अपार भण्डार की कुंजी अर्थपूर्ण समस्या

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

और विश्लेषणीय परिकल्पना के स्रोत के द्वार खोल देती है तथा समस्या के परिभाषीकरण, अध्ययन की विधि के चुनाव तथा प्राप्त सामग्री के तुलनात्मक विश्लेषण में सहायता करती है। वास्तव में रचनात्मक, मौलिकता तथा चिन्तन के विकास हेतु विस्तृत एवं गम्भीर अध्ययन आवश्यक है।

जॉन डब्ल्यू बेस्ट के अनुसार "व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों में प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त, जो प्रत्येक पीढ़ी को नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहीत एवं सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योग सभी क्षेत्र में उसी विकास का आधार है।

समीक्षा के गुण –

(1) यह अनावश्यक पुनरावृत्ति से बचाता है।

(2) यह समीक्षा के ज्ञान, उसकी स्पष्टता तथा कुशलता को स्पष्ट करता है।

(3) अब तक उस क्षेत्र में हो चुके कार्य की सूचना देता है।

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 5

(8)

(4) पहले किये गये कार्य के आकड़े वर्तमान अध्ययन में सहायक होते है

(5) यह समस्या का चुनाव करने में सहायक होता है

(6) यह समस्या के विश्लेषण एवं कथन में सहायक होता है

(7) यह समस्या के निष्कर्ष निकालने में सहायक होता है

(8) पाठक के धन की बचत करता है

(9) पाठक के समय की बचत करता है

सम्बन्धित साहित्य की सीमाएं - सम्बन्धित साहित्य का निरीक्षण जहाँ समीक्षक के कार्य के लिये अत्यन्त महत्वपूर्ण है वही उसकी कुछ सीमाये भी है जो कि समीक्षक को उन्हे जानने और अपने अध्ययन में सावधानी रखने में सहायक होती है

अन्य समीक्षक के द्वारा प्राप्त निष्कर्षों से अपने अध्ययन में प्राप्त निष्कर्षों की तुलना करते समय हम कुछ बातो की उपेक्षा कर देता है।

(1) पूर्व में किये गये समीक्षा में समीक्षक की क्या अवधारणाये थी ?

Signature of the checker

(9)

Mohit

Page : ____
Date : ____

Serial No. 6

② उसके समीक्षा में न्यादर्श की क्या विशेषताऐं थी?

③ क्या उसके द्वारा समीक्षा में उपयोग किये गये उपकरण वैद्य और विश्वसनीय थे।

④ समीक्षक द्वारा उठायी गयी समस्या के लिये प्रयुक्त न्यायदर्श सही था?

⑤ अन्य समीक्षक द्वारा ली गयी समस्या तथा समीक्षक द्वारा ली गयी समस्या में कितनी समानता है।

REVIEW (I)

पुस्तक का नाम – शिक्षक, शिक्षण एवं तकनीकी
लेखक – डॉ. शिवपाल सिंह
प्रकाशक – आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में नवीनीकरण और आधुनिकीकरण तीव्र गति से परिवर्तित हो रहे है शिक्षक प्रक्रिया का सूत्रधार है इसलिये उसे अधिक प्रभावपूर्ण और प्रबुद्ध बनाने की आवश्यकता है। जिसे शैक्षिक तकनीकी द्वारा परिवर्तित करने में सुगमता होगी। शैक्षिक तकनीकी के माध्यम से शिक्षक और शिक्षण में अभूतपूर्व परिवर्तन लाया जा सकता है। अतः अध्यापक शिक्षा व

Signature of the checker

UNITED SCHOLAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 7

शिक्षण में शैक्षिक तकनीकी द्वारा राष्ट्रीय अवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकती है।

प्रस्तुत पुस्तक में प्रत्ययों को समझने का बारीकी से प्रयास किया गया है तथा यथास्थान उपयुक्त उदाहरणों के द्वारा भरपूर प्रयास किया गया है कि विद्यार्थी प्रत्येक तथ्य को भली भाँति समझ सके। प्रत्येक विचारधारा से सम्बन्धित विद्वान का नाम उसी स्थान पर दिया गया है, जहाँ उस धारा की चर्चा हुई है।

यह पुस्तक विश्वविद्यालयों के नवीन दो वर्षीय पाठ्क्रम के अनुसार सात इकाईयों तथा उन्नीस अध्यायों में विभक्त की गई है।

प्रत्येक रचना जैसा की सर्वविदित है अपने आप में नई और विशिष्ट होती है। कुछ ऐसा इस रचना के साथ भी है उसे पढ़कर आपको निम्न जानकारी प्राप्त होगी।

निर्धारित रचना जैसा की सभी इकाईयों तथा प्रकरणों को ठीक तरह से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है —

0 प्रत्येक अध्याय का शुभारम्भ प्रस्तावना से यह बताने की चेष्टा की गई है कि सम्बन्धित अध्याय में क्या कुछ बताया जाना है।

Signature of the checker

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 8

- भाषा और प्रस्तुतीकरण का ढंग पाठकों के स्तरानुसार रोचक तथा बोधात्मक ही रहे, इसका विशेष ध्यान रखा गया है।

- प्रत्येक अध्याय के अंत में उचित अभ्यास आवृत्ति है दीर्घ उत्तरीय तथा लघु उत्तरीय प्रश्न दिये गये है जो अत्यन्त सराहनीय है।

यह पुस्तक इस विषय के लिये निश्चित ही मील का पत्थर साबित होगी। आशा है आगे भी लेखक इसी तरह उपयोगी पुस्तकें छात्रों को उपलब्ध करते रहेंगे।

REVIEW-2

पुस्तक का नाम — अधिगमकर्त्ता का विकास

लेखक — डॉ. शिवपाल सिंह, राकेश कुमार लेखरी

प्रकाशक — आर. लाल बुक डिपो, मेरठ।

आज के युग में शिक्षा का विस्तार रूप में हो चुका है और अध्यापक का यह कर्तव्य होता है कि वह प्रत्येक गूढ़ तथ्य को कुशलता से तथा सरल रूप में समझा सके, इसके लिये उसका शिक्षण प्रभावशाली होना चाहिये। शिक्षक का ज्ञान बढ़ाने के लिये

Signature of the checker

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 9

पुस्तकें महत्वपूर्ण साधन होती है। प्रस्तुत पुस्तक इसी का एक जीवन उदाहरण है।

इस पुस्तक में किसी भी सम्प्रत्यय को स्पष्ट करने के लिये केवल उपयुक्त परिभाषाओं को प्रस्तुत किया गया है तथा इन परिभाषाओं के अर्थ व भाव स्पष्ट किए गया है तथा लेखक ने अपने अनुभवों के आधार पर नए रूप से परिभाषित भी किया गया है। जिसके फलस्वरूप मनोविज्ञान जैसे गूढ, कलिष्ट तथा अस्पष्ट विषय रुचिकर तथा सरल बन गया है। इसी के परिणामनुसार पाठकों को विषय को समझने तथा ग्रहण करने में कठिनाई नहीं होनी चाहिए। पुस्तक में विषय सामग्री को तार्किक क्रम में प्रस्तुत करने के साथ-साथ प्रत्येक स्तर पर अध्येताओं की कठिनाईयों को समझ एवं उन्हीं के अनुभव के अनुसार दूर करने का प्रयास भी किया गया है।

प्रस्तुत पुस्तक में विषय-वस्तु 12 अध्याय में बाँटा गया है।

प्रस्तुत पुस्तक का प्रणयन शिक्षा मनोवैज्ञानिक के शिक्षकों एवं प्रशिक्षण महाविद्यालयों के छात्राध्यापकों को दृष्टिगत रखते हुये किया गया है तथा सम्पूर्ण शिक्षण सामग्री को क्रमिक तौर पर सरल तथा रुचिकर भाषा में प्रस्तुत किया गया है तथा पुस्तक छात्र-छात्राओं की आवश्यकताओं, इच्छों, आकांक्षाओ, रुचियो, अभिरुचियों

Signature of the checke

(3)

Mohit

Page :

Date :

Serial No. 10

आदि को समझकर उसका निदान मे सहायक सिद्ध होगी।

प्रस्तुत पुस्तक चौधरी चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ व अन्य विश्वविद्यालयो के बी. एड. प्रथम वर्ष के लिये अत्यन्त उपयोगी है। यह पुस्तक शिक्षा मनोविज्ञान के अनेक क्षेत्रो पर ~~महत्वपूर्ण के अनेक क्षेत्रो पर~~ महत्वपूर्ण प्रकाश डालती है तथा इस विषय से सम्बन्धित सभी पक्षो को तर्कसंगत ढंग से सरल भाषा मे प्रस्तुत करने का प्रयास है।

REVIEW - 3

पुस्तक - भारत 2020 नवनिर्माण की रूपरेखा

प्रकाशन - राजपाल, एण्ड सन्स, कश्मीरी गेट, दिल्ली

लेखक - डा. ए. पी. जे अब्दुल कलाम, वाई. एस. सुन्दर राजन

संस्करण - 2004

क्या भारत विकसित देश बन सकेगा

जब भारत अपनी स्वाधीनता के लिए संघर्ष कर रहा था तब इस पुस्तक के दोनो लेखको का जन्म हुआ।

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

14

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 11

जब जवाहर लाल नेहरु ने स्वाधीनता प्राप्त होने पर ट्रिस्ट विथ डेस्टिनी नाम प्रसिद्ध अपना भाषण दिया, तब हम में से एक स्कूल के अन्तिम वर्ष में शिक्षा प्राप्त कर रहा था दोनो में से किसी का भी परिवार धनी नहीं था। मुझे यह बात बहुत अच्छी लगी की दोनो लेखको के सोचने का तरीका एक ही था। मैने इस पुस्तक में देखा दोनो लेखको के विचारो में आधुनिक भारत का विकास करने के लिए स्वतन्त्र देश में विज्ञान और तकनीकी के उपयोग की सम्भावना तथा भवितव्य देख रहे थे।
जब भारत आजाद हुआ तब लेखक किशोर थे और दंगे फसाद रेडियो पर सुना करते थे जो दोनो लेखको की सराहनीय प्रथा कि वे देश के बारे में चिंतित थे और देश की खबर रखते थे। इस प्रकार हमने जो साधन तरीके तथा उपाय विकसित किए और परीक्षण करके जिनकी जाँच की उनका एक ही उद्देश्य था, एक विकसित शक्तिशाली तथा गवान्त ऐसा भारत का निर्माण जिसके प्रत्येक नागरिक को उनसे प्राप्त होने वाली सुविधाएं उपलब्ध हो।
स्वाधीनता का अन्तर (69) वर्ष पूरा कर चुके है और आज के अधिकांश भारतवासी इसी अवधि में पैदा हुए है। हर साल हमारे देश की जनसंख्या दो करोड़ बढ़ जाती है। अथवा विश्वीकरण की शक्तियो का सहारा लेकर अपने स्वयं के प्रत्यनो को तिलांजलि दे देंगे? यह कथन मेरे हृदय को छू गया।

Signature of the checke

इस सभी तथ्यो को ध्यान में रखते हुए भारत और अन्य देशो सम्बन्धी अनेक विकास रिपोटो को अध्ययन करने के बाद हमारा निश्चित विश्वास है कि सन् 2020 में हमारा देशो की श्रेणी तक पहुँच सकने में पूर्ण समर्थ है। इस पुस्तक में उसने इस विषय से सम्बन्धित कई विचार प्रस्तुत किए है सन् 2020 तक या उससे पूर्व भी विकसित देश की कल्पना स्वप्न मात्र नहीं है।

उपसंहार —

इस पुस्तक को पढ़ने के बाद मैंने निर्णय लिया कि यह पुस्तक को पढ़ने से बच्चो में सकारात्मक विचारों का उदय होगा। इस पुस्तक में अपने देश को विकसित बनाने में जितने भी बिन्दु दिए है। इस पुस्तक में प्रत्येक पाठ कुछ कहावते है जो उदय को छू लेती है और प्रत्येक पाठ में नया संकेत मिलता है जो मुझे देश के प्रति प्रेम की प्रेरणा देता है जैसे

हम वही है जैसा हम सोचते है
हम जो अपने विचारों से है
और अपने विचारों में
हम अपनी दुनिया का निर्माण करते है।

प्रत्येक पाठ के अन्त में उससे सम्बन्धित आंकड़े प्रस्तुत किए गए है प्रत्येक पाठ के शुरुआत में प्रेरणा देने वाली कहावते तथा अन्त में पाठ से सम्बन्धित आंकड़े की वजह से मुझे

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :

Date :

(16)

Serial No. 13

यह पुस्तक अच्छी लगी है

REVIEW 4

पुस्तक - भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ

लेखक - प्रो॰ रमन बिहारी लाल

प्रकाशक - विनय रखेजा

संस्करण - 2015

भारतीय शिक्षा का इतिहास, विकास एवं समस्याएँ पुस्तक के प्रस्तुत संस्करण में विभिन्न विश्वविद्यालयों के बी॰ एड॰ शिक्षक शिक्षा के नवीनतम पाठ्यक्रमो के अनुसार है। मुझे पाठ्यक्रम के सभी प्रकरण इस पुस्तक में मिल गये है जो मुझे अच्छा लगा। इन पाठ्यक्रमो में अधिकतर प्रकरण काफी हद तक समान है। इस पुस्तक में इतिहास का अध्ययन कालक्रमानुसार किया गया है और किसी काल के इतिहास का अध्ययन एक विशेष तार्किक क्रम से किया जाता है इस क्रम में यदि ऐतिहासिक घटना न हो तो मैं इसे भूल जाती है। इस पुस्तक मे कुछ ऐसा ही किया गया है क्रमिकता के कारण इसे याद रखने में सरलता होती है हमारे देश की शिक्षा का इतिहास अति प्राचीन है

Signature of the checker

UNITED BEING SOCIETY

Scanned with CamScanner

इसका अध्ययन तीन कालो मे किया गया है

① प्राचीन काल

② मध्य काल

③ आधुनिक काल

इस पुस्तक की भाषा शैली सरल है जिसे याद करने में आसानी होती है पुस्तक के अन्त में वस्तुनिष्ठ प्रश्न दिए गये है जो अत्यन्त उपयोगी है।

इस पुस्तक में किसी भी समय की शिक्षा प्रणाली, शिक्षा आयोग शिक्षा, शिक्षा प्रस्ताव और शिक्षा नीति के मुख्य तथ्यो की संक्षेप में आवृत्ति की गई है जो ऐतिहासिक तथ्यो को समझने एवं उन्हें स्मरण रखने के लिए अति आवश्यक है।

इस पुस्तक मे भारतीय शिक्षा की वर्तमान शैक्षिक समस्याओ की विवेचना संक्षेप में किया गया है और मुख्य समस्याओं का विवेचना ये एवं सामान्य शिक्षा के बिन्दुओ में दिया गया है इस पुस्तक में जो बिन्दु संक्षेप में होना चाहिए वे संक्षेप में है तथा जो बिन्दु विस्तृत होने चाहिए वे विस्तृत है। अतः सभी दृष्टि से पुस्तक पढ़ने हेतु बहुत अच्छी है।

Signature of the checker

REVIEW-5

पुस्तक - प्राथमिक शाला शिक्षक के लिए मनोविज्ञान

प्रकाशन - N.C.E.R.T

प्राथमिक शाला शिक्षक के लिए मनोविज्ञान अंग्रेजी में लिखी पुस्तक Psychology for the Elementary School Teacher का अनुवाद है इसका अनुवाद प्रो॰ एस॰ एन त्रिपाठी ने किया है
इस पुस्तक को तैयार करने में अध्यापक प्रशिक्षण के कार्यक्रम को ध्यान में रखा गया है साथ उन कठिनाईयो समस्याओ और चुनौतियो को भी महत्व दिया गया है। इसमे जो उदाहरण दिये गये है। वह हमारे स्कूल के वातावरणो एव परिस्थतियो से ही लिये गये है। जिनमे हमारा शिक्षक कार्य करते है। पुस्तक लिखने का एक और उद्देश्य उसकी सामग्री को रुचिकर, सुगम और भाषा को सरल रखने का प्रयास किया गया है

पुस्तक छः भागो मे विभाजित है

भाग (1) - छात्र शिक्षको का मनोवैज्ञानिक से परिचय कराता है और अध्यापक के कार्य में इसके महत्व की

Signature of the checker

(17)

Mohit

Page :
Date :

Serial No: 16

व्याख्या करता है।

भाग ② – उसमें बाल विकास की प्राथमिक शाला के सन्दर्भ में विवेचना की गई है।

भाग ③ – इसमें व्यक्तिगत विभिन्नताएँ, उनसे उत्पन्न समस्याएँ और शिक्षक के कार्य में अनेक निहितार्थ के बारे में चर्चा की गई है।

भाग ④ –
इसमें अध्यापक – अधिगम प्रक्रिया का वर्णन है। यहाँ बताया गया है कि विभिन्न प्रकार के अधिगम कैसे घटित होते हैं और उन्हें कैसे आगे बनाया जा सकता है।

भाग ⑤ – इसमें प्राथमिक शाला के सन्दर्भ व निर्देशक की विवेचना की गई है।

भाग ⑥ – यह उन कारकों से सम्बन्धित है जो शिक्षक को प्रभावशाली बनाते है। पुस्तक पढ़ने में ऐसा एहसास होता है इस प्रकार बच्चों के लिए पुल्लिंग का उपयोग किया गया है। उसमें लड़कियाँ भी सम्मिलित है ऐसा सुविधा के लिए किया गया है।

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 17

REVIEW-6

पुस्तक – विकासोन्मुख समाज में शिक्षक और शिक्षा

लेखक – प्रो एस पी सुखिया

पुस्तक का प्रस्तुत संस्करण विभिन्न विश्वविद्यालयो के बी॰ए॰ शिक्षाशास्त्र एवं बी॰ एड॰ शिक्षाशास्त्र के नवीनतम पाठ्यक्रमो के अनुसार तैयार किया गया है। इन पाठ्यक्रमो में अधिकतर प्रकरण समान है एक दो कारण ही कम अधिक है इस पुस्तक में उन सबको एक साथ प्रस्तुत किया गया है

शिक्षा के सिद्धान्तो और उनकी विभिन्न समस्याओ को भली-भाँति समझने और उनका विश्लेषण कर पाने के लिए उन सभी शिक्षा के सामाजिक आधारो को जानना आवश्यक है क्योंकि शिक्षा एक सामाजिक प्रक्रिया वस्तु और संस्था है

शिक्षा के विभिन्न आधारो मे दार्शनिक आधार की महत्ता स्वयंसिद्ध है। शिक्षा दर्शन का अब बहुत विकास हो गया है चार पाँच दर्शनो ने तो शिक्षा को अत्यधिक प्रभावित किया है।

शिक्षा दर्शन के विरुद्ध विकासोन्मुख भारतीय समाज में शिक्षक और शिक्षा मे किया है। इस पुस्तक में शिक्षा दर्शन का सरल और संक्षिप्त विवेचना है स्वतंत्र भारत में समाज बहुत तेजी से उभर रहा है।

Signature of the checker

(2)

Serial No. 18

विषय वस्तु से सम्बन्धित बिन्दुओं को अत्यन्त सरल, सुबोध और सजीव ढंग से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

REVIEW - 7

पुस्तक – शिक्षा के दार्शनिक आधार

लेखक – डॉ. गिरीश पचौरी

प्रकाशन – सूर्या पब्लिकेशन्स

युक्तिपूर्वक तत्वज्ञान प्राप्त करने के प्रयत्न को दर्शन कहा जाता है। दर्शन सम्पूर्ण विश्व को समझने और उसकी संगत व्याख्या करने का एक प्रयास है। आज के युग में दर्शन की आवश्यकता अन्य सभी युगो से अधिक है क्योंकि दर्शन का कार्य जीवन की दिशा को निर्धारित करना है। हमारी तार्किक क्षमता को बढ़ाकर तर्कपूर्ण ढंग से चिन्तन करने की आदत डालता है जीवन की नित नियी जटिल परिस्थितियो को सुलझाने में हमारी सहायता करता है और मानवीय मूल्यो के प्रति आस्था पैदा कर हमें सच्चा मानव बनाने का प्रयास करता है।

Signature of the checker

(22)

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 19

सभी दार्शनिक यह स्वीकार करते है कि दर्शन जीवन को सफल बनाने के लिए है। प्रत्येक दार्शनिक अपने विचारो के अनुसार व्यक्ति और समाज को सवारना चाहता है। महावीर, बुद्ध, ईसा, शंकराचार्य, सुकरात, प्लेटो, अरस्तु, रूसो, ड्यूवी मार्क्स, गाँधी, विवेकानन्द, टैगोर, अरविन्द आदि दार्शनिको ने निश्चय ही दर्शन को व्यवहारिक रूप देने मे सफलता प्राप्त की है इनके दार्शनिक विचारो से जनजीवन अत्यधिक प्रभावित हुआ है दर्शन शिक्षा का प्रमुख आधार है चतुर्थ खण्ड मे दार्शनिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण समस्याओ जैसे शिक्षा के उद्देश्य, पाठ्यक्रम, शिक्षण विधि स्वतन्त्रता और, अनुशासन, धर्म, संस्कृति, मानव मूल्य, आदि के विषय मे चिन्तन पर प्रकाश डाला गया है अन्तिम पंचम खण्ड मे प्रमुख भारतीय दार्शनिको के शैक्षिक चिन्तन पर प्रकाश डाला गया है इस प्रकार पुस्तक पर प्रकाश डाला गया है इस प्रकार का विषय क्षेत्र काफी व्यापक है कि यह पुस्तक स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर की एक पाठ्य-पुस्तक की सामान्य मान्यताओ का निर्वाह करते हुए दार्शनिक समस्याओ का युक्तियुक्त विश्लेषण देकर चिन्तन एवं मनन को दृढ़ आधार प्रदान करती

REVIEW-8

पुस्तक - सफलता सिर्फ चार कदम पर

लेखक - राम शंकर तिवारी

Signature of the checker

23

Mohit

Serial No. 20

प्रकाशन – क्वालिटी पब्लिशिंग कम्पनी, भोपाल

सफलता एक मशीनी प्रक्रिया नही है इसकी प्रकृति जीवन्त ओजस्वी एवं लचीली है यह विकासशील है न की अचानक होने वाले हादसे की श्रृंखला। सफलता का नक्शा अपने रास्ते बदल सकता है बहाव की दिशा परिवर्तित कर सकता है और अपने गन्तव्य ध्येय को अनिर्णयात्मक स्वरुप दे सकता है जीवन के उत्ताल समुद्र में घटनायें लहरो के समान होती है एक बाद एक लगातार। इसीलिये अधिकतर आधुनिक फार्मूले जिन्हे सफलता के मन्त्र का नाम दिया जाता है सफल नही हो पाते। ज्यादा से ज्यादा वे आपरवोज कर सिले गये मंत्र समाज के कुछ ही लोगो के ऊपर फिट हो सकते है या बहुत ही कम लोगो को प्रेरणा दे सकते है जिन्हे ध्यान में रखकर ये बनाए जाते है अधिकतर समाजसेवी संस्थाये अपने सदाचरण की चीखती सुरो में दी जाने वाली शिक्षा और तथा कथित उच्च विचारो के शोर के साथ ही अदृश्य हो गई। या तो वे महत्वहीन हो गई अथवा उनका क्षय हो गया अब सफलता की चुनौतियां नये परिवेश की ताजगी के लिए आतंकवाद विरोधी सोच हरी भरी दुनिया और पर्यावरण की सुरक्षा, भूमण्डली करण, विज्ञान, टेक्नोलॉजी, स्वास्थ और औषधि में भागीदारी, दयालुता, कष्ट निवारण और मानव एवं पशु-पक्षियो

Signature of the checker:

के अधिकार के रूप लेकर दुनिया की विचारधारा की केन्द्र बिन्दु बन गई। वास्तव में यह एक महान परिवर्तन है यह गलत धारणा है कि मनुष्य जब तक किसी भी कार्य में, जो उसने चुना है, उच्चतम शिखर पर नही पहुँच जाता वह सफल नही माना जाता।

उदाहरणार्थ -

व्यापार, लेखक, कृषि, खेलकूद, नौकरी, संगीत चित्रकारी, राजनीति, धनोपार्जन इत्यादि उपक्रमो की सीढी के सबसे ऊँचे पायदान पर पहुचना ही सफलता है अन्यथा नही। गहन विचार करने पर यह निष्कर्ष निकलता है कि सफलता एक यात्रा है अन्तिम पड़ाव नही। जीवन के किसी भी क्षेत्र में मान्यता हासिल करना एक पक्ष है और उत्तम है परन्तु अन्य पक्षो का पूर्ण होना आवश्यक है। इन विचारो से सारांश निकालता है कि हजारो में एक सफलता की उच्चतम चोटी पर पहुँच पाते है यद्यपि अन्य हजारो परिस्थितियो की प्रायः समानता में भी कठोर श्रम करते हुए शिखर को नही पाते।

इसके अतिरिक्त मनुष्य के झुण्ड सफलता की खोज में जीवन भर एक ही स्थान पर चक्कर लगाते रहते है परन्तु कही भी नही पहुँचते। यहाँ तक की जिन लोगो पर सफल होने का 'केबल' लगा दिया जाता है।

Signature of the checker

प्रस्तुत किताब में हमारे व्यक्तित्व के प्रमुख क्षेत्रों का अध्ययन किया गया है और उनके विकास की सम्भावनाओं के रास्ते खोजे गये है इनमें हमें सुख शक्ति का अनुभव होने की धारणा मिलती है अत्यधिक धन की आकण्ठ प्रचुरता नहीं। ऐसी सफलता पाने के लिए आधुनिक विचारो का प्राचीन बुद्धिमत्ता के साथ समन्वय किया गया है जिससे जीवन में परिपूर्णता और स्वतन्त्रता का उदय हो सके, न कि उन्मत्त ऐश्वर्य विलास का एहसास।

जीवन का उद्देश्य 'स्वतन्त्रता' है लालच, बुरी इच्छाओं, घृणा और अनियन्त्रित मोह से छुटकारा। और अन्ततः हमारा लक्ष्य है मन की स्थिरता, आत्मज्ञान, सम्पूर्णता का अनुभव, वैभव, प्रतिष्ठित जीवन और शालीनता से जीवन से विमोहित हो जाना। परन्तु इस स्तर को पाने के लिये जीवन पर्यन्त प्रयास और प्रबन्धन की आवश्यकता है। इन क्षेत्रों में उद्यम करना ही पुरुषार्थ है। इन सबके होते हुए भी प्रारब्ध और सम्भावनाओ को भी मौका दिया जाना चाहिये क्योंकि हम प्रारब्ध की ही उत्पत्ति है।

REVIEW-9

पुस्तक - गाँधी जी के आश्रम में

लेखक - डा॰ प्रभाकर माचवे

प्रकाशन - राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसन्धान और प्रशिक्षण परिषद

1991

Signature of the checker

Mohit

Serial No. 23

Page : 28

'गाँधी जी के आश्रम' पुस्तक के प्रथम अध्याय आश्रम में एक साथ बहुत सी बातो को सम्मिलित किया गया है जिसकी वजह से अधिकतर बाते स्पष्ट रूप से नही है इसके अध्याय में उसके प्रकरण के अनुरूप बातें नही की गई है। बल्कि प्रकरण से सम्बन्धित बाते बहुत ही कम तथा अन्य बातो की मात्रा बहुत ज्यादा प्रतीत होती है बल्कि प्रकरण से सम्बन्धित बाते बहुत ही कम तथा अन्य बातो की मात्रा बहुत ज्यादा। प्रतीत होता है वैसे तो इस अध्याय का नाम है – 'आश्रम' परन्तु इसे पढ़ने के बाद लगता है कि इसका नाम होना चाहिए 'गाँधी जी का जीवन परिचय' क्योंकि इस अध्याय में उनके जीवन की जन्म से लेकर मृत्यु तक के जीवन पर प्रकाश डाला है और आश्रम के बारे में बहुत कम व अस्पष्ट रूप मे दर्शाया गया है। इसमें सिर्फ ऊपरी व अस्पष्ट जानकारी है। इसमें बातो को सुनियोजित तरीके से नही कहा गया है।

'गाँधी जी की दिनचर्या' नामक अध्याय में गाँधी जी की दिनचर्या बहुत ही सुव्यवस्थित तरीके से दर्शायी गयी है इसमें गाँधी जी के प्रातः काल से लेकर रात्री विश्राम तक की छोटी से छोटी एवं सम्पूर्ण जानकारी दी गई है जैसे– गाँधी जी कब उठते थे क्या खाते थे कौन कौन से कार्य करते थे इसमें गाँधी जी की दिनचर्या को बड़े ही अच्छे व स्पष्ट

Signature of the checker

रूप में प्रस्तुत किया गया है जो सबका साथ रहने का स्थान, कार्यालय, चिकित्सालय, सामुदायिक तथा सामूहिक श्रम की प्रयोगशाला थी। आश्रम के सभी सदस्य सारा काम खुद ही करते थे।

इस पुस्तक 'गाँधी जी के आश्रम' के चतुर्थ अध्याय 'रचनात्मक कार्यक्रम' में गाँधी जी द्वारा किये गये सराहनीय व उपयोगी कार्यक्रमों का वर्णन किया गया है जिसके द्वारा हमें पता चलता है कि गाँधी जी के विचार उनका प्रेम आम जनता के लिये कितना है इसे अध्याय में बहुत से कार्यक्रमों का वर्णन किया है - जैसे - साम्प्रदायिक एकता, छुआछूत को नहीं ममता, शराबबंदी, खादी को बढ़ावा, दूसरे ग्रामोद्योग, ग्राम सफाई, बुनियादी शिक्षा, प्रौढ़ शिक्षा, स्त्रियों की उन्नति आदि।

यह देखा गया है कि अच्छे पाठ्यक्रम और अच्छी पाठ्यपुस्तकों के बावजूद हमारे विद्यार्थियों की रुचि स्वतः पढ़ने की ओर अधिक नहीं बढ़ती। इसका एक मुख्य कारण बहुत ही कम विद्यालयों में कोर्स के बाहर की पुस्तकों को पढ़ने के लिये प्रोत्साहन दिया जाता है। लेकिन अतिरिक्त पढ़ने में बच्चों की रुचि न होने का एक बड़ा कारण यह भी है कि विभिन्न आयु वर्ग के बच्चों के लिये कम मूल्य की अच्छी पुस्तकें पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध नहीं है।

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 25

28

REVIEW-10

पुस्तक - भारत की महान नारियाँ अहिल्याबाई होलकर
लेखक - पुष्पा पाल

भारत में समाज एवं मानवता के लिए समर्पित महिलाओं की गौरवपूर्ण परम्परा रही है। कई बार तो उन्होंने समाज को उचित नेतृत्व भी दिया है। कई क्षेत्रों में तो पुरुषों से भी अधिक कुशलता से महत्वपूर्ण कार्य करके दिखाया गया है। मध्यकालीन भारत के होलकर राज्य की महारानी अहिल्याबाई का नाम भी इसी गौरवपूर्ण परम्परा में प्रमुखता से लिया जाता है। सभी शासक एक दूसरे राज्य हड़पने के लिये कुटिल चालों में व्यस्त रहते थे। ऐसे समय में भी अहिल्याबाई ने न किसी राज्य पर हमला किया और न दूसरे राज्य ही उन पर हमला करने का साहस कर पाए।

अहिल्याबाई पर यद्यपि अब तक बहुत कुछ लिख गया है किन्तु ये ऐतिहासिक दृष्टि से ही अधिक लिखा गया है। आम पाठक, विशेषरूप से महिलाएँ, उनके जीवन एवं चरित्र से कुछ प्रेरणा ग्रहण कर सकें इस दृष्टि से यह पुस्तक प्रस्तुत की गई है। आज के समय में उनके आदर्शों की आवश्यकता सम्पूर्ण समाज को है। यदि अहिल्याबाई के सब का भला - अपना भला के मार्ग का अनुसरण किया जाए तो बहुत सी जटिल समस्याओं से आसानी से छुटकारा पाया जा सकता है।

Signature of the checker

29

Mohit

Serial No. 26

Page :
Date :

REVIEW-11

पुस्तक – सामाजिक विज्ञान शिक्षण

लेखक – अशोक शर्मा, मीनू अग्रवाल

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है समाज मे रहते हुए वह अपना जीवन चक्र पूर्ण करता है वर्तमान समाज मे हो रहे तीव्रगामी परिवर्तन की स्थिति मे व्यक्ति के लिए समाज मे समायोजित होना अपेक्षाकृत कठिन हो गया है तथा वैश्वीकरण की स्थिति मे स्वयं की पहचान हेतु सामाजिक विज्ञान विषय के शिक्षण की उपयोगिता निःसंदेह बढ़ गई है। अतः इसके अध्ययन – अध्यापन को प्रोत्साहन किया जाना आवश्यक है।

सामाजिक विज्ञान के अध्यापक की आवश्यकताओं / कठिनाइ को दृष्टिगत करते हुए प्रस्तुत पुस्तक विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (U.G.C) (बी॰ एड॰) के नवीन पाठ्क्रम के अनुसार सरल, सुगम एवं बोधगम्य शैली मे व्यवस्थित व क्रमबद्ध रूप मे प्रस्तुत की गई है। पुस्तक मे कुल 27 अध्याय है वर्तमान पाठ्यक्रम मे व्यवहारिक शिक्षण की दृष्टि से सूक्ष्म शिक्षण दोनो को पाठ-नियोजन सहित प्रस्तुत करने का प्रयास किया है आशा है इस प्रयास से समाजशास्त्रियो, शिक्षको और छात्राध्यापको को एक नयी चेतना और अन्तर्दृष्टि प्राप्त हो सकेगी।

Signature of the checker

Serial No. 27

Mohit

Page :
Date :

मूल्यांकन की नूतन अवधारणा के अनुकूल विश्वविद्यालयी परीक्षा में पूछे जाने वाले प्रश्नो में निबन्धात्मक लघु-उत्तरात्मक और वस्तुनिष्ठ प्रश्नो को एक नयी अन्त में दिया गया है जिससे विद्यार्थी अधिक लाभ उठा सके।

पुस्तक के सृजन में विभिन्न विद्वानो की कृतियो से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष सहयोग लिया गया है हम उन सभी के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते है। हमे सदैव प्रेरणा प्रदान करने तथा हमारा मार्ग प्रशस्त करने के लिये हम अपने गुरुजनो एवं सहयोगियो के प्रति हृदय से आभारी है।

REVIEW-12

पुस्तक - शिक्षा मनोविज्ञान

लेखक - डॉ. महेन्द्र कुमार मिश्रा

वर्तमान मे शिक्षा मे एक बहुआयामी का अपना एक अहम महत्व है। यदि कोई व्यक्ति सफल शिक्षक बनना चाहता है तो उसे व्यवहार का मनोविज्ञान जानना अति आवश्यक है क्योकि सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली मे व्यवहार का मनोविज्ञान ही एक ऐसा क्षेत्र है जिसे जानकर व्यक्ति अपनी व्यवसायिक उन्नति प्राप्त कर सकता है।

प्रस्तुत पुस्तक में इससे सम्बन्धित लगभग सभी विषयो को सम्मिलित किया गया है जिनमे कुछ प्रमुख है - मनोविज्ञान एवं शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ, क्षेत्र, पद्धतियाँ एवं उपयोगिता, व्यक्तिगत, व्यक्तिगत विभिन्नताएं, अधिगम का स्थानान्तरण, कारक, सिद्धान्त एवं शिक्षक के

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

3/

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 28

लिये महत्व या प्रावधान, सृजनात्मक या सृजनशीलता, बुद्धि का अर्थ, सिद्धान्त, विकास का स्वरूप और शिक्षा, शैशवावस्था या पूर्व बाल्यकाल, बाल्यावस्था तथा किशोरावस्था
पुस्तक निःसंदेह न केवल शिक्षा शास्त्रियो हेतु उपयोगी होगी, अपितु इस विषय में गहन अध्ययन करने वाले मनोविज्ञानियो हेतु भी मार्गदर्शक होगी।

REVIEW-13

पुस्तक → शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं कक्षा-कक्ष प्रबन्ध

लेखक – श्रीमति मंजू मिश्रा

वर्तमान में शिक्षा ने एक बहुआयामी प्रक्रिया का रूप ग्रहण कर लिया है। इस बदलते परिवेश में शिक्षाविदो ने समय एवं समाज की आवश्यकता एवं मांगो को ध्यान में रखते हुए शिक्षा तथा शिक्षण को नये प्रयोगो एवं नवीनतम तकनीकी से जोड़ने का जोरदार प्रयत्न किया है। इसमें अपने में दर्शन, मनोविज्ञान, समाज-शास्त्र नियोजन आदि विषय को आत्मसात कर लिया है।

ऐसा प्रतीत होता है कि शिक्षाविदो, सरकार एवं समाज-निर्माताः को यह अनुभव हो गया है कि बालक को केवल सामान्य पुस्तकीय ज्ञान तक ही सीमित रखने की मानसिकता को त्याग कर, शिक्षण के साथ तकनीके भी बतानी ही होगी। कि इसके प्रयोग से शिक्षा एवं शिक्षण

Signature of the checker

Mohit

(32)

Serial No. 29

में गुणात्मक विकास सम्भव है। यह बालक के सर्वांगीण विकास में भी सहायक है।
वर्तमान परिवर्तित शैक्षिक वातावरण में जिस प्रकार का प्रयोग बढ़ता जा रहा है उससे शिक्षा क्षेत्र को अलग रखना असम्भव है इसलिए इसका अध्ययन एवं अध्यापन करना आज के समाज की एक बड़ी आवश्यकता है।

प्रस्तुत पुस्तक शिक्षण तकनीकी में आधुनिक शिक्षण व्यवस्था के हर पर प्रकाश निक्षेप किया गया है इसमें शिक्षण तकनीकी के अर्थ उद्देश्य एवं महत्व को बहुत ही सरलता से पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है। इसमें शिक्षा के नवाचार जैसे- सूक्ष्म शिक्षण, अभिक्रमित अनुदेशन अनुदेशन आदि पर बहुत ही सूक्ष्म विवेचना प्रस्तुत किया गया है।

REVIEW-14

पुस्तक - शिक्षा का दार्शनिक एवं समाजशास्त्र पृष्ठभूमि

लेखक - डॉ० रामशकल पाण्डेय

शिक्षा के विभिन्न आधारों में दार्शनिक आधार की महत्ता स्वयंसिद्ध है शिक्षा दर्शन का अब बहुत विकास हो गया है। चार-पांच दर्शनों ने तो शिक्षा को अत्यधिक प्रभावित किया है शिक्षा दर्शन का विशद

Signature of the checker

33

Mohit

Serial No. 30

Page :
Date :

विवेचना शिक्षा दर्शन नामक पुस्तक मे किया है किन्तु वह ग्रन्थ उच्चस्तरीय है और स्नात्तोकर कक्षाओ के लिये शिक्षा दर्शन का सरल एवं संक्षिप्त विवेचना अपेक्षित है अतः इस पुस्तक संक्षिप्त में उपरोक्त सामग्री प्रस्तुत की गयी है।

विगत वर्षों में शिक्षा पर समाजशास्त्र ने बहुत प्रभाव डाला है शिक्षा के विकास और शिक्षण प्रक्रिया के समुचित संचालन के लिये अब समाजशास्त्रीय सिद्धान्तो का ज्ञान आवश्यक है किन्तु स्नातक स्तर के लिये शैक्षिक समाजशास्त्र के अनिवार्य सिद्धान्तो की सरल आलोचना हेतु एक पुस्तक की विशेषता प्रतीक हुई यह कार्य उस आवश्यकता की पूर्ति की दिशा में कदम है।

वर्तमान पुस्तक में चार खण्ड है प्रथम खण्ड शिक्षा के दार्शनिक आधारो का विश्लेषण प्रस्तुत करता है शिक्षा और दर्शन के स्वरूप का वर्णन करने के पश्चात शिक्षा दर्शन के स्वरूप क्षेत्र और आवश्यकता का विवेचना करता है तत्पश्चात प्रकृतिवाद, आदर्शवाद, प्रयोजनवाद, यथार्थवाद और अस्तित्ववाद के प्रमुख दार्शनिक सिद्धान्तो का एवं उनके शैक्षिक निहितार्थ का विश्लेषण किया गया है द्वितीय खण्ड में भारतीयदर्शन की विशेषताओ एवं भारतीय आदर्शवाद तथा भारतीय भौतिकवाद के सन्दर्भ में शिक्षा की आलोचनात्मक परीक्षा की गई है। तृतीय खण्ड में व्यक्ति और समाज, धर्म और शिक्षा जैसी कुछ शैक्षिक समस्याओ की दार्शनिक

Signature of the checker

UNITED SEPHAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

दृष्टि से संक्षिप्त करने का प्रयास किया गया है चतुर्थ खण्ड में पाठकों को शिक्षा के समाजशास्त्रीय आधार का विवेचना पढ़ने को मिलेगा जिसमें शिक्षा पर समाजशास्त्रीय संघात का वर्णन किया गया है इस खण्ड में यह प्रयास किया गया है कि यह समूचा विश्लेषण भारतीय परिस्थितियों में हो।

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

35

Mohit

Page :

Date :

Serial No. 32

Review - 15

Book - Mahatma Gandhi Eternal Pilgrim of peace and love

Writer : Dr. K.D Gangrade & Ramakrishnan

Publications : Bhartiya Vidya Bhawan

There are probably very few still living Indians can say, hand on heart, that they have see in Mahatma Gandhi in person and have interacted with him with every passing year this number keeps decreasing. Gandhiji as well all know was assassinated in 1948. for one to claim to

Signature of the checker

Serial No. 33

Mohit

Page :

Date :

36

have had even a few minutes interactions with the Mahatma, the person should have been born around 1930. In other words, such a person would now be seventy plus. Among these limited few who had actively and intimately know Gandhiji is Shri Ramakrishnan who is presently the executively secretary and Director General of the executive of Bhartiya Vidya Bhawan, mumbai the socio cultural organisation set up by Kulpati Kanhaiya M. Munshi, In his time shri Ramakrishnan served Sardar Vallabhbhai Patel.

If there is one man them who can speak the authority on the men of these, it is surely is S. Rama-Krishna was not just a distant watcher, he was more often an active participants in the events

Signature of the checker

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 34

that led to freedom. So he is doubly qualified to write on men and women who made history. That is the special significance of the collection of articles that Shri Ramakrishnan wrote over a period of time for the Bhavan's Journal. These articles were collected by Shri Sheshrao Chavan were written over a period of year but they still retain there freshness that is because the Mahatma remains relevant ey this days, half a century after his passing away. Sir George Slocombe, a british journalist who managed to get an interview with Gandhiji in 1930 following Dandi March.

Signature of the checker

Mohit

(38)

Serial No. 35

Page :

Date :

There are no doubts several hundred work on Mahatma available in the market, many out of print some would be beyond the access of ordinary citizen. That is why this particular collection assumes special significance in the first place, it is timely one and authoritative work, that goes without saying. In the second place, its cover a wide range of gandhiji's life and work can therefore be said to be comprehensive. Shri Ramakrishan has an easy style which may be described as reader friendly.

Shri Ramakrishna remains said that such a one as this did indeed walk upon this earth and enriched the lives of millions He evokes in his reader a sense of wonder and administration. Both ways it is significant and meaningful.

Signature of the checker

Mohit

Page :

Date :

Serial No. 36

Review - 16

Books Teacher Education
Writer V.K. Singh
Publisher Discovery Publishing House

The DPH education handbook has been created provide access to information about contemporary topics in education. Practitioners and students at all levels in education have a need to know what is happening today in addition to historical treatment writing and literature.

Each chapter within the handbook is designed to provide the user with needed "state of the art" information as well as further sources of information

Signature of the checker

The handbook will be use of to graduate and post graduate scientist in education and to practicing teachers, administrators, librarians and planners.

An effort to achieve universal and effective education is based on a recognition of the right of students to basic education that enables them to thrive in a complex society as well as the realization the technological and economic growth is facilated by increasing the number of students, even those with poor academic progress, who are in the place successful in learning.

This series is addressed to administration, planners and education and educators working in the field of education and training with a view to stimulating interesting and

Signature of the checker

Scanned with CamScanner

43

Mohit

Page :

Date :

Serial No. 40

words in Indian Space
Research and missile
programs. It is the story
of a boy from a humble
background who went on
to become a key player
in Indian Space Research.
I recently picked up
copy and read in the
book we learn how Kalam
started his career it is
a coupling day. It was
enjoying initially but
tended to drag a bit
towards the end.
I loved the initial
chapters of Wings of Fire
since it gives a vivid
picture of our country during
1930-1950. Kalam was
born in Rameshwaram
a sacred for pilgrims
was about a ten minute
walk from our house.

Signature of the checker

Mohit

Serial No. 41

44

The high priest of Rameshwaram temple, Pakshmi Lakshman Shastri, was very close friend of my father's one of the most vivid memories of my childhood is of the two men, earth in his traditional attire.

Kalam in younger years wanted to be an officer in air force, however he couldn't clear the interview. He met Swami Sivanand after his failure and I found his words to Kalam interesting and in a way prophetic. Accept your destiny and go ahead with your life. You are not destined to become an Air Force Pilot. what your destined to become is not revealed not but it is predetermined. Forget this failure as it was essential to lead you to your destined path search instead for the true purpose of existence.

Signature of the checker

Mohit

Page :
Date :

Serial No. 11

teacher be a responsible person for shaping the future. Teaching is fundamentally a moral process in which teachers strive to shape, challenging and change students under standing for the betterment of the students. All these highlight the fact that there is a high demand value of education in field of education.

Signature of the checker

THE END

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner